धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

देवात्मा अंक

दिसम्बर- 2012

* महान सुन्दरताओं के जन्म दाता
* सबके आश्रय स्थान
* जीवन की आशा के जहाज़
* सब अधिकारी आत्माओं के लिए परम आवश्यक सम्बन्ध
* सत्य विश्वासों के प्रेरक
* देव बाणी

अद्वितीय आविर्भाव

पंडित हर नारायण जी अग्निहोत्री लिखते हैं: -

पूजनीय भगवन्!

इन दिनों आपके पिछले महोत्सव सम्बन्धी उपदेश के पाठ और उस पर विचार करने से आप की अद्वितीय महिमा फिर मेरे सन्मुख आई है। उस समय आपने जिस सुख लालसा को पहले सब धर्म मतों की एक साधारण भूमि बताया था कि जिस से परिचालित होकर उसकी प्राप्ति और उसके विरूद्ध दुखों से बचने के लिये पृथ्वी के नाना सम्प्रदायों ने कल्पित मतों वा गप्पों का प्रचार किया और उन पर आत्मिक रूप और जीवन की हक़ीक़त कुछ न खुली, उसका दृश्य फिर मेरे सन्मुख आ गया और उनके ऐसे सब कल्पित और मिथ्या मतों को नष्ट करने, आत्मिक विकास और विनाश के आधार पर सत्य धर्म की शिक्षा देने और सत्य धर्म को स्वयं अपने जीवन में प्रदर्शित करके उसे औरों को दान करने के लिये सच्चे और पूर्ण जीवन दाता और परित्राता का आविर्भाव हुआ, उसकी महान छवि भी मेरी आंखों के आगे फिर गई और यह तत्व दिखाई दिया कि यद्यपि लाखों बकरियां और भेड़ें इस दुनिया में रहती होतीं, और सैंकड़ों बड़े बड़े हाथी भी इस पृथ्वी पर फिरते होते, हां उनसे भी बढ़ कर मनुष्य से मिलने जुलते शिम्पानज़ी वा गुरीला की जाति के सैंकड़ों बानर भी रहते होते, जैसा कि वह अब रहते हैं, तो भी मनुष्य ने भाप की शक्ति को पहचान कर इन्जन और उसके द्वारा चलने वाली जो रेल और अन्य कलें जारी की हैं और तार के द्वारा वा बिना तार के दूर दूर तक ख़बरों के पहुंचाने की जो तरकीबें निकाली हैं, वह कहीं न होती, न उसके बनाए हुए आश्चर्यजनक शीश महल वा ताज महल कहीं नज़र आते। ठीक इसी प्रकार जब तक यह पृथ्वी कल्पना और मिथ्याप्रिय लाखों और करोड़ों मनुष्यों से भरी हुई थी और उस पर पूर्णाग सत्य और हित अनुरागी देवात्मा अविर्भूत नहीं हुआ था, तब तक सत्य धर्म के विचार से दुनिया के बड़े बड़े विद्वान भी उस विलक्षण जयोति से वंचित थे, जो एकमात्र देवात्मा से निकली और निकल सकती थी। तब मेरा कितना बड़ा सौभाग्य, कि मुझे ऐसे अद्वितीय आत्मा की अद्वितीय ज्योति को पाने का अधिकार मिला और उस ज्योति को अन्धकारग्रस्त शत शत आत्माओं तक पहुंचाने के लिये भाव उदय हुआ। शोक, अब तक आपके ऐसे महान और निराले आविर्भाव को जिस दर्जे महान और उच्च अनुभव करके विनीत और गहरे श्रद्धावान होने और इस विधि से आपके साथ जुड़कर अपना कल्याण साधन करने की आवश्यकता है, उसमें मेरे भीतर बहुत बड़ी कमी है। ऐसा हो कि आपके अतुल देव रूप का मैं अधिक से अधिक चिन्तन करके अपने श्रद्धाभाव को गाढ़ कर सकूँ।

आपका तुच्छ बालक

हरनारायण अग्निहोत्री

(सेवक खण्ड 6 संख्या 9 पृष्ठ 3)

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 12
दिसम्बर – 2012
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महान सुन्दरताओं के जन्म दाता
मेरे भगवान
(श्री. पी वी. कनल)

सुख अनुराग की भूल भुलैयां

"इस तथ्य को अच्छी तरह जानो और पहचानो कि आपकी आत्मा की रक्षा और उन्नति दूसरों की वासना – रहित सेवा पर निर्भर करती है।"

देव आत्मा

जब तक अहंकार है, तभी तक अपने दोषों का अस्वीकार है

जननी का यह रूप क्या मनुष्य को दिखाई देता है? क्या यह प्रारम्भिक आत्मिक अनुभूति भी मनुष्य

उचित

घर रूपी मन्दिर को बरबाद कर देते हैं। धन का लोभ

करना भी त्रासदी है कि बुराई का साथ देकर कुछ

ब्रह्म समझते थे, परन्तु उनकी मृत्यु पानी में डूबने के कारण हुई। क्या उनके अनुयाई समझ सकेंगे कि

उसे शीघ्रतम गति से अपने मुक्ति दाता और आशा के स्रोत के चरणों में पहुंचने की आवश्यकता है।

सत्य धर्म बोध उत्सव में शामिल होकर



"अगर किसी मकसद के लिए खड़े हो तो एक पेड़ की तरह रहो, और गिरो तो बीज की तरह ताकि दुबारा उगकर फिर से उसी मकसद के लिए जंग कर सकें।"

हैं। एक जन षड्यंत्र करके दूसरों को नीचे गिरा कर स्वयं सत्ता प्राप्त करता है। वह भी राक्षस है। एक आक्रमणकारी दूसरे देश पर आक्रमण करता है। उस देश के लोगों के धन और उनकी स्वतंत्रता का अपहरण करता है। वह चाहे किसी भी नाम से अपने आपको पुकारे, वह है तो वास्तव में डाकू ही। आक्रामक जन राक्षस है।

सत्य विश्वासों के प्रेरक

आत्मा का सत्य ज्ञान प्रदान करके मेरे भगवान ने ऐसे सत्य प्रदान किए हैं जो हमारे भीतर सत्य और अटल विश्वासों को विकसित करते हैं। उन्होंनें हमें सत्य और महाविशाल नेचर का सत्य ज्ञान प्रदान किया है। उन्होंने बताया है कि यह नेचर या विश्व अपने आप में एक पूर्ण अस्तित्व है। यह नेचर अभाजय है, स्वयंभू है और अनादि है। इस नेचर में परिवर्तन और विभिन्नता के विश्वव्यापी नियमों का राज्य है। घटनाओं और परिवर्तन की अटल विधियों का नाम ही अटल नियम है। इस प्रकार हमारा वास एक ऐसे विश्व में है जो सत्य और सार है, जिसमें अटल नियामों का राज्य है ओर यह नियम प्रत्येक अस्तित्व पर काम करते हैं और अपरिवर्तनीय हैं। अतः हम एक पूर्णतः भरोसे के योग्य विश्व में रहते हैं। यह अछिन्न परिवर्तन जो सारे विश्व में काम करता है, दो ही प्रकार का है। पहला परिवर्तन वह है जिससे कोई अस्तित्व अपने रूप और गुणों के विचार से पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ बनता है और दूसरी प्रकार का परिवर्तन मनुष्य को उसके रूप और गुणों के विचार से अश्रेष्ठ बनाता या उसका पतन करता है। पहले प्रकार का परिवर्तन विकासकारी और दूसरे

प्रकार का विनाशकारी या पतनकारी है। दूसरी प्रकार के परिवर्तन से हमारा शुभ नहीं होता, क्योंकि वह हमें पतन की ओर तथा अंत में विनाश की ओर ले जाता है। इसीलिए हमें उस विनाश के पथ के त्याग करने की आवश्यकता है।

विकास का पथ बड़ा विस्मयजनक और परम कल्याण का पथ है। उसकी दिशा यह है कि पदार्थो और अस्तित्वों तथा नस्लों में उच्च परिवर्तन लाता रहता है। जो उसके अधीन होते हैं, वे श्रेष्ठ बनते जाते हैं। इसी नियम से नेबुला से परिवर्तन होकर एक गठन प्राप्त संसार का निर्माण होता गया। अजीवित या भौतिक शक्तियों से परिवर्तन होकर जीवित शक्तियां बनती गई। यह नाना प्रकार की जीवनी शक्तियां ही वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत में अपना कार्य करती हैं।

विकास का नियम भौतिक और जीवित जगतों के अस्तित्वों को हानिकारक अनमेल से निकाल कर उन्हें उच्च मेल की ओर ले जाता है। विकास और विनाश के दोनों नियम मनुष्य पर अपना कार्य करते हैं।

विकास के नियम का साथी बन कर मनुष्य उन्नत होता और विकसित होता है। विनाश का साथ न देकर उसका जीवन सुरक्षित होता है।

यह विकास और और विनाश के नियम किसी जन या कल्पित ईश्वर और उसके एजेंटों की आज्ञा से ठहर नहीं जाते। विकास और विनाश के नियमों का ज्ञान प्रत्येक मनुष्यात्मा के लिए बड़ा महान लाभ है।

भगवान देवात्मा ने हमें इस सत्य ज्ञान की उपलब्धि कराके हम पर अपार करूणा की है। हमारा पथ प्रदर्शन करने वाली ज्योति हमें प्रदान कर दी है। यह सत्य ज्ञान प्रदान करके उन्होंने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए की जाने वाली सब प्रार्थनाओं और कुरबानियों को समाप्त कर दिया है। विकास के नियम को फुसलाया नहीं जा सकता। उसकी खुशामद नहीं की जा सकती। नियमों को तो पूरा करना पड़ता है। कोई नियम पूरा करके उसका फल अनिवार्य है।

हमें अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं का फल प्राप्त करने के लिए किसी पुरस्कार दाता की आवश्यकता नहीं। नेचर का नियम पूरा होने के साथ साथ ही हमें अपने आप ही फल मिलता जाता है। इस महा विशाल विश्व में सब सौदा नकदा नकदी है। उधार का कोई काम नहीं। हमारी प्रत्येक चिन्ता और क्रिया से उसी समय हमारे शरीर और आत्मा में परिवर्तन आता जाता है। नियम की अटलता और विश्व व्यापकता का ज्ञान इन मिथ्या विश्वासों को दफा कर देता है कि पापों से क्षमा मिल जाती है किसी की सिफारिश से गुनाह माफ हो जाते हैं, कोई न्याय के या कयामत के दिन दंड और पुरस्कार बांटे जाते हैं। और कर्म की थ्योरी भी कि जिसके अनुसार यहां के कर्मो का फल पुनर्जन्म में मिलता है, सर्वथा मिथ्या प्रमाणित हो जाती है।

विकास के महान और अटल नियम का ज्ञान हमें इस सत्य विश्वास से भर देता है कि हम इस विकास विषयक नियम का साथ देकर सुरक्षित हो जाते हैं। हमें साथ साथ ही उसका पुरस्कार मिलता जाता है। तुरन्त हम उन्नति के पथ पर पड़

जाते हैं। हम पापों और अपराधों से मुक्त होते जाते हैं और अपने भीतर उच्च गुणों और उच्च भावों को विकसित करते जाते हैं।

भगवान देवात्मा ने हमें यह शिक्षा दी है कि हम इस पूर्ण नेचर या विश्व का अंश और अंग है। यदि हम जीवित रहना चाहते हैं तो हमें सम्पूर्ण विश्व की भलाई में, जिसके हम अंग हैं, योगदान देना होगा। कैसा महान सत्य! एक बार हम इसको उपलब्ध कर लें, तो फिर समझ लेंगे कि नीच अनुराग और नीच घृणाएं हमारे सबसे भयानक शत्रु हैं क्योंकि वह हमें दूसरों को हानि पहुंचाने की ओर ले जाते हैं।

जबकि मनुष्य मात्र की रक्षा इसमें है कि वह विकास के नियम के साथ मेल करे और उसका सहयोगी बने, और यह तब ही सम्भव है जब वह नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष प्राप्त करे और अपने भीतर उच्च भावों को विकसित करे, तो फिर ऐसे सामानों और सम्बन्धियों और ऐसे वातावरण में वास करना और श्वास लेना कैसा महा सौभाग्य है, जिसमें हमारा मोक्ष और विकास सम्भव है। यह शर्ते नेचर ने नियत की हैं, मनुष्य ने नहीं। यह शर्ते देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करने की हैं। जो इस देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करता है, वह नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के भयानक रूप को देखने के योग्य बनता है और नीच रागों और घृणाओं से मोक्ष और उच्च भावों को विकसित करने की योग्यता भी लाभ करता है। अतएव प्रत्येक अधिकारी मनुष्यात्मा के लिए देव ज्योति और देव तेज लाभ करना अनिवार्य है।

इस देव ज्योति और देव तेज के स्त्रोत भगवान देवात्मा हैं और कोई नहीं, क्योंकि देव शक्तियों के विकास से ही देव ज्योति और देव तेज का विकास हेा सकता है, और यह देव शक्तियां अपने पूर्ण रूप में परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव रूप में ही विकसित हुई हैं मनुष्य जन्म पाकर भगवान देवात्मा के चरणों में आना कैसा महा सौभाग्य! जहाँ उनका देव रूप अनुभावातीत और परम श्रेष्ठ और परम सुन्दर है, वहां उनकी देव ज्योति और देव तेज उनके उपासक को अपना आश्रय स्थान और परम सौभाग्य लाभ करने के योग्य बनाते हैं। पूजा के लिए हमें देवात्मा प्राप्त हो जाते हैं और अपने जीवन के लिए हमें उच्च भावों की प्राप्ति होती है कि जिसके द्वारा हम विकास के अद्वितीय नियम के सहयोगी बनते हैं और सुरक्षित हो जाते हैं।

जैसे ही हम दो महान सत्यों को समझ लेते हैं, हमें उस अटल और श्रेष्ठतम विश्वास की भी प्राप्ति हो जाती है, जो हमें अपने आत्मा के सर्वांग विकास और आत्मा के सर्वोच्च जीवन को लाभ करने में सहायता प्रदान करता है। काश हमारा विश्वास बलिष्ठ होता जाए और अधिक से अधिक जीवन्त बनता जाए, ताकि इस विश्वास के द्वारा हम अधिक विकास और श्रेष्ठ फलों को प्राप्त कर सकें।

हमारी भगवान देवात्मा के श्री चरणों में यही प्रार्थना है कि हम उपरोक्त विश्वास के दृढ़ विश्वासी बन सकें।

देव बाणी

मेरे पास रहकर जिस किसी जन में जहां तक उच्च भावों की उत्पति वा उन्नति हुई है, वहां तक जैसे उसका आत्मा उच्च हुआ है, वैसे हि उनके न होने से उस के द्वारा मुझे जिस जिस प्रकार का और कई बार बहुत असह्य कलेश मिलता रहा हैं और जब उसका आत्मा पतित होता था, उस में भी कमी अई है।

जिन जिन बातों के द्वारा कोई जन मेरे पास रहकर मेरे लिए आघातकारी वा दुखदाई और हानिकारक बनता रहा है, वह यह है: -

1) अपने से किसी बड़े के प्रति उचित सन्मान् प्रदर्शन न करना, अथवा अपनी किसी क्रिया से उस का अपमान् करना।

2) अपने से बड़ों की उचित आज्ञाओं को पालन न करना।

3) किसी से सम्बन्ध में कोई अपराध करके अर्थात् उससे कोई अनुचित दु:ख वा हानि पहुँचा के सन्तुष्ट और शान्त रहना।

4) अपने किसी अपराध के विषय में कुछ सुन न सकना, और उसके विषय में कुछ कहे जाने परउसे ठीक ठाक बनाने के लिए कुछ बातें बनाना वा बताने वाले के सम्बन्ध में द्वेष-मूलक कोई चिन्ता वा निन्दा करना वा ऐसे नीच भाव का किसी और प्रकार से प्रकाश करना।

5) प्रति दिन उसके लिए जिस जिस काम का जिस जिस समय तक पूरा कर देना आवश्यक हो, उसे भुला देना वा जान बूझ कर पूरा न करना, अथवा नियत समय में पूरा न करना अथवा खराब करना।

6) अपने निवास वा कार्य स्थान आदि को मैला और अपनी चीज़ो को अपरिपाटी वा विशृंखला की अवस्था में रखना।

7) अपने परम हितकर्ता वा किसी सच्चे सम्बन्धी के रोग वा कष्ट वा विपद आदि की ओर से उदासीन रहना, और उस के किसी दु:ख दर्द वा उसकी विपद वा किसी और आवश्यकता के समय में उसका साथ न देना, वा उसके सम्बन्ध में विश्वासधाती अथवा अपने मुख्य सम्बन्ध को छोड़ कर किसी गौण वा तुच्छ सम्बन्ध वा-सुख का पक्षपाती बन जाना।

8) परिश्रमी न होना, और काम से जी चुराना।

ऐसे कई प्रकार के उच्च बोधों से विहीन सामाजिक जनों से मुझे जिस जिस प्रकार के आघात् और कलेश आदि मिलते रहे थे, उनका मैं ने एक बार सन् 1903 के एक लेख में दृष्टात के तौर पर कुछ वर्णन किया था।

Published on 5th of the month
20
दिसम्बर – 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

वीरवार 27 दिसम्बर 2012

प्रवेश सभा – 4.30 बजे सायं

शुक्रवार 28 दिसम्बर 2012

1– पहली सभा – 9.00 बजे प्रात:

विषय – *परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध*

2– पब्लिक लैक्चर – 4.30 बजे सायं

वक्ता – *प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़*

3– संगीत सभा 7.30 बजे सायं

शनिवार 29 दिसम्बर 2012 (महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि – 6.30 बजे प्रात:

1– पहली सभा 8.30 बजे प्रात:

विषय – *भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।*

2– दूसरी सभा – 2.00 बजे दोपहर – बच्चों की सभा ।

3– पब्लिक लैक्चर – 4.00 बजे सायं

वक्ता – डाक्टर विनोद जी खेड़ा

4– दीप माला – 6.00 बजे सायं

5– आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर भी दे सकते हैं)

रविवार 30 दिसम्बर 2012

1– पहली सभा – 8.30 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2– भाव प्रकाश

3– देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :–

1. *कृपया सेवक–सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।*
2. *आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।*
3. *यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।*
4. *अपने आने की पहले संख्या समेत सूचना देने की कृपा करें।*

फोन : 0172–2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts